

जहाँ चाह वहाँ रह

करत करत अभ्यास के जड़माँते होत सुजान

अब पछताए होत क्या जब चोड़िया चुग गई खेत

दूर के ढोल सुहावन लगते हैं

एक और एक ग्यारह होते हैं